ज्ञान संग्रह सीरीज TM

दिशा

राजस्थान

कल, आज और कल

राजस्थान बजट **2021-22, आर्थिक समीक्षा 2020-21**

वार्षिक प्रतिवेदन 2021-22 (वन, पशुपालन, उद्योग)

नवीनतम कृषि, औद्योगिक, पर्यटन, ऊर्जा नीतियों सहित

सभी आँकड़ों का अद्यतन (up-to-date) समावेश

अध्यायवार Examination Focus

सम्पादक

डॉ. राजीव 'लेखक' (P.R.)

एम.ए. लोक प्रशासन एवं इतिहास (NET)

एक्सपर्ट इन राजस्थान फॉर आर.ए.एस.

[RAS Main's Raj. G.K. में 100 में से 83 अंक प्राप्तकर्ता]

21वाँ संशोधित, परिष्कृत एवं परिवर्धित संस्करण

मूल्य: **899₹**

ॐ बृहस्पतयेतियदपर्थोऽ हद्युमद्विभाति क्रतुमज्जानेषु ।
यही द्रयच्छयसऽ ऋत प्रजाततदस्मासु द्रीवणं धेहिचित्रम ॥

Copyright © Publisher New Edition ISBN No. 978-81-937763-0-8

PUBLISHER

Disha Prakashan, Jaipur, Rajasthan

Reg. No. 13/686/2007, TM No. 1383311

मुख्य वितरक- Mobile No.- **94142 48346**

कोई व्यक्ति या फर्म इस पुस्तक का नाम, डिजाइन, अन्दर की सामग्री पूर्ण या आंशिक रूप से तोड़-मरोड़कर व अदल-बदलकर छापने का साहस न करे, अन्यथा वे कानूनी तौर पर हर्जे व खर्चे के जिम्मेदार होंगे। यद्यपि तथ्यों की सत्यता सुनिश्चित करने के सम्बन्ध में सभी सम्भव सावधानियाँ बरती गई हैं तथापि पुस्तक में किसी त्रुटि या अन्य दोषों के लिए प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होगा। किसी भी परिवाद् के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर (राज.) होगा।

RAS Pre हेतु दिशा प्रकाशन की अनुपम प्रस्तुति

RAS Pre Series -I

राजस्थान : कल , आज और कल

(राजस्थान G.K. के सभी अध्यायों का समावेश)

RAS Pre Series -II

सामान्य ज्ञान एवं सामान्य अध्ययन

(राजस्थान के अतिरिक्त G.K. के अन्य सभी आयामों का समावेश)

सर्वाधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक 'Exam Review'

- दिशा राजस्थान (भूगोल, अर्थव्यवस्था एवं राजव्यवस्था) परीक्षा 20^{20} - MRP : 299/-
- दिशा राजस्थान (इतिहास, कला एवं संस्कृति) परीक्षा 20^{20} - MRP : 299/-
- दिशा कम्प्यूटर परीक्षा 20^{20} - MRP : 251/-
- दिशा रीजनिंग परीक्षा 20^{20} - MRP : 299/-
- दिशा भारत GK परीक्षा 20^{20} - MRP : 299/-
- दिशा इतिहास परीक्षा 20^{20} - MRP : 299/- (शीघ्र प्रकाशित)
- दिशा भूगोल परीक्षा 20^{20} - MRP : 299/- (शीघ्र प्रकाशित)
- दिशा भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था परीक्षा 20^{20} - MRP : 299/- (शीघ्र प्रकाशित)

प्रतियोगियों से.....

'दिशा राजस्थान कल, आज एवं कल' का 21वाँ संस्करण **RAS (प्रारम्भिक व मुख्य परीक्षा) के नये पैटर्न के अनुसार पूर्णतः संशोधित, परिष्कृत एवं परिवर्धित** किया गया है।

RAS Pre and Main परीक्षा में राजस्थान G.K. से सम्बन्धित पाठ्यक्रम लगभग समान है। अतः प्रारम्भिक परीक्षा के दौरान ही मुख्य परीक्षा के राजस्थान सम्बन्धी पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए अपनी तैयारी को विशिष्ट दिशा प्रदान करें, ताकि प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा के मध्य अल्पकालिक समय में भी आप मजबूत तैयारी कर सफलता प्राप्त कर सकें। **RAS (प्रारम्भिक व मुख्य परीक्षा) एवं कॉलेज व्याख्याता से सम्बन्धित सभी प्रश्नों का समावेश इस पुस्तक में किया गया है।**

ध्यातव्य है कि वर्ष 2001 से **RPSC** की विभिन्न परीक्षाओं में राजस्थान से संबंधित प्रश्नों में से **90% से अधिक प्रश्नों की गारंटी की प्रतिबद्धता का सफलता पूर्वक निर्वहन** किया है। यह कृति प्रतियोगी हेतु 'अमूल्य निधि' है क्योंकि.....

- बीते हुए **कल** की परीक्षाओं में **सबसे बेहतर परिणाम** देने वाली कृति है।
- **आज** **'Systematic Approach'** पर आधारित राजस्थान सामान्य ज्ञान की **सबसे विश्वसनीय कृति** है।
- आने वाले **कल** की परीक्षाओं में आपको सुदृढ़ आधार एवं अद्यतन (**UP-to-date**) सामग्री प्रदान कर **सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन** कराने में सक्षम है।

इस कृति में सामग्री के प्रस्तुतिकरण में सभी आयामों (भाषा सरल एवं सुबोध, प्रश्न-पत्र की प्रकृति पर आधारित समसामयिकी एवं समाहित सामग्री) को मद्देनजर रखा गया है, ताकि आपकी तैयारी को विशिष्ट दिशा मिल सके। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपका कर्मठ परिश्रम तथा हमारा सुनियोजित प्रयास नवीन इतिहास का सृजन करेंगे।

सम्प्रति दौर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा का है। प्रत्येक प्रतियोगी को सफलता प्राप्ति हेतु अपने साध्य प्राप्ति हेतु सर्वोत्तम साधन के साथ सामंजस्य बैठाना होता है। बाजारीकरण के इस दौर में **'सर्वोत्तम साधन'** की पहचान करना आपकी **'सफलता का मेरूदण्ड'** है। इसके अभाव में आपकी सफलता संदिग्ध बनी रहती है।

पाठकों से मेरा अनुरोध है प्रतियोगी को पुस्तक का चुनाव बहुत ही सावधानी से करना चाहिए क्योंकि आपका कोई भी गलत निर्णय या गलत राय आपको असफलता के कगार पर पहुँचा सकती है। प्रतियोगिता में अन्तिम सफलता उसी को मिलती है जो **सही दिशा** में प्रयत्न करता है। यदि आपका वास्तविक लक्ष्य उत्तर दिशा हो तो आप पश्चिम दिशा में चलकर लाख प्रयत्न करें आप अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते है। इसलिए सदैव ध्यान रखें कि -

'' कोई भी लक्ष्य कठिन नहीं । सफल वही जो दिशाहीन नहीं ।।''

कृपया हमारे प्रकाशन की पहचान हेतु संपादक **'राजीव लेखक'** का नाम अवश्य जाँच लें क्योंकि 2001 **से अब तक प्रकाशित सभी कृतियों की यह मौलिक पहचान रही है।**

अग्रिम शुभकामनाओं के साथ .....

- संपादक

आर.ए.एस. प्रारम्भिक परीक्षा में राजस्थान G.K. का पाठ्यक्रम (22 जुलाई, 2021 को जारी)

- **राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत** - ● राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल-पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक। ● ऐतिहासिक राजस्थान : प्रारम्भिक ईस्वी काल के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केन्द्र। प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति। ● प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ-गुहिल, प्रतिहार, चौहान, परमार, राठौड़, सिसोदिया और कच्छावा। मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था। ● आधुनिक राजस्थान का उदय-19वीं-20वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में सामाजिक जागृति के कारक। राजनीतिक जागरण - समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका। 20वीं शताब्दी में जनजाति तथा किसान आन्दोलन, 20वीं शताब्दी के दौरान विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन। राजस्थान का एकीकरण। ● राजस्थान की वास्तु परम्परा- मंदिर, किले, महल एवं मानव निर्मित जलीय संरचनाएँ; चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प। ● प्रदर्शन कला - शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य; लोक संगीत एवं वाद्य; लोक नृत्य एवं नाट्य। ● भाषा एवं साहित्य-राजस्थानी भाषा की बोलियाँ। राजस्थानी भाषा का साहित्य एवं लोक साहित्य। ● धार्मिक जीवन - धार्मिक समुदाय, राजस्थान में संत एवं सम्प्रदाय। राजस्थान के लोक देवी-देवता। ● राजस्थान में सामाजिक जीवन-मेले एवं त्योहार; सामाजिक रीति-रिवाज तथा परम्पराये; वेशभूषा एवं आभूषण। ● राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व।
- **राजस्थान का भूगोल** - ● प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं ● जलवायु की विशेषताएं ● प्रमुख नदियाँ एवं झीलें ● प्राकृतिक वनस्पति एवं मृदा ● प्रमुख फसलें-गेहूँ, मक्का, जौ, कपास, गन्ना, एवं बाजरा ● प्रमुख उद्योग ● प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें ● जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात एवं प्रमुख जनजातियाँ ● खनिज- धात्विक एवं अधात्विक ● ऊर्जा संसाधन- परम्परागत एवं गैर-परम्परागत ● जैव-विविधता एवं इनका संरक्षण ● पर्यटन स्थल एवं परिपथ
- **राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था** -● राज्य की राजनीतिक व्यवस्था -राज्यपाल, मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्, विधानसभा, उच्च न्यायालय। ● प्रशासनिक व्यवस्था - जिला प्रषासन, स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज संस्थाएं। ● संस्थाएँ - राजस्थान लोक सेवा आयोग, राज्य मानवाधिकार आयोग, लोकायुक्त, राज्य निर्वाचन आयोग, राज्य सूचना आयोग। ● लोक नीति एवं अधिकार -लोक नीति, विधिक अधिकार एवं नागरिक अधिकार-पत्र।
- **राजस्थान की अर्थव्यवस्था** - ● अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य ● कृषि, उद्योग व सेवा क्षेत्र के प्रमुख मुद्दे ● संवृद्धि, विकास एवं आयोजना ● आधारभूत-संरचना एवं संसाधन ● प्रमुख विकास परियोजनायें ● राज्य सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाएँ - अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/पिछड़ा वर्ग/अल्पसंख्यकों, नि:शक्तजनों, निराश्रितों, महिलाओं, बच्चों, वृद्धजनों, कृषकों एवं श्रमिकों के लिए।
- **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी** - ● कृषि-विज्ञान, उद्यान-विज्ञान, वानिकी एवं पशुपालन राजस्थान के विशेष संदर्भ में ● विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास राजस्थान के विशेष संदर्भ में

आर.ए.एस. मुख्य परीक्षा में राजस्थान G.K. का पाठ्यक्रम

- **प्रश्न पत्र-I** :- ● राजस्थान का इतिहास कलाएं संस्कृति साहित्य परम्परा और धरोहर - ☞ प्रागैतिहासिक काल 18 वीं शताब्दी के अवसान तक राजस्थान के इतिहास के प्रमुख सोपान, महत्त्वपूर्ण राजवंश, उनकी प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था। ☞ 19 वीं - 20वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएं - किसान एव जनजाति आन्दोलन, राजनीतिक जागृति, स्वतंत्रता संग्राम और एकीकरण। ☞ राजस्थान की धरोहर : प्रदर्शन व ललित कलाएं, हस्तशिल्प व वास्तुशिल्प, मेले, पर्व, लोक संगीत व लोक नृत्य। ☞ राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ एवं राजस्थान की बोलियाँ। ☞ राजस्थान के संत, लोक देवता एवं महत्त्वपूर्ण विभूतियाँ। ● राजस्थान की अर्थव्यवस्था - ☞ राजस्थान के विशेष संदर्भ में कृषि, बागवानी, डेयरी और पशुपालन। ☞ औद्योगिक क्षेत्र संवृद्धि और हाल के रूझान। ☞ राजस्थान के विशेष संदर्भ में संवृद्धि, विकास और आयोजना। ☞ राजस्थान के सेवा क्षेत्र में वर्तमान में हुए विकास एवं मुद्दे। ☞ राजस्थान की प्रमुख विकास परियोजनाएं- उनके उद्देष्य और प्रभाव। ☞ राजस्थान में आर्थिक परिवर्तन के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी मॉडल। ☞ राज्य का जनांकिकी परिदृश्य और राजस्थान की अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव। ☞ राजस्थान के जनजातीय समुदाय-भील, मीणा एवं गरासिया
- **प्रश्न पत्र-II**:- • राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में सार्वजनिक स्वास्थ्य उपक्रम। • राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में जैव विविधता एवं उसका संरक्षण। • राजस्थान राज्य की पारंपरिक प्रणालियों के विशेष संदर्भ में जल संरक्षण। • राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में कृषि विज्ञान, उद्यान-विज्ञान, वानिकी, डेयरी एवं पशुपालन। • प्रमुख भौतिक भू-आकृतियाँ: पर्वत, पठार, मैदान, नदियाँ एवं झीलें • प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश • प्राकृतिक वनस्पति एवं जलवायु • पशुपालन, जंगली जीव-जन्तु एवं उनका संरक्षण • कृषि- प्रमुख फसलें • खनिज संसाधन- (क) धात्विक खनिज: प्रकार, वितरण एवं उनका औद्योगिक उपयोग, (ख) अधात्विक खनिज: प्रकार, वितरण एवं उनका औद्योगिक उपयोग • ऊर्जा संसाधन: परम्परागत एवं गैर परम्परागत स्त्रोत • जनसंख्या एवं जनजातियाँ
- **प्रश्न पत्र-III** :- • राजस्थान की राज्य-राजनीति दलीय प्रणाली, राजनीतिक जनांकिकी, राजस्थान में राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा के विभिन्न चरण, पंचायती राज एवं नगरीय स्वशासन संस्थाएँ • राजस्थान में प्रशासनिक ढाँचा एवं प्रशासनिक संस्कृति- राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रीपरिषद, राज्य सचिवालय एवं मुख्य सचिव। • जिला प्रशासन- संगठन, जिलाधीश एवं पुलिस अधीक्षक की भूमिका, उपखण्ड एवं तहसील प्रशासन। • राज्य मानवाधिकार आयोग, राज्य निर्वाचन आयोग, राज्य वित्त आयोग, लोकायुक्त, राजस्थान लोक सेवा आयोग एवं राजस्थान लोक सेवा अधिनियम, 2011 • राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद। • महाराणा प्रताप पुरस्कार इत्यादि • राजस्थान में महत्त्वपूर्ण भूमि विधियाँ- (क) राजस्थान भू राजस्व अधिनियम, 1956 (ख) राजस्थान काश्तकारी अधिनियम,1955

अनुक्रमणिका

खण्ड–1.
राजस्थान : विहंगम दृष्टि में

1. राजस्थान : एक परिचय (Rajasthan : An Introduction) 1.1-1.18

- राज्य के प्रतीक चिह्न 1.3
- राजस्थान में सबसे प्राचीन, बड़ा एवं छोटा 1.5
- विश्व एवं भारत में राजस्थान 1.6
- राजस्थान में सर्वाधिक एवं न्यूनतम 1.8
- राजस्थान में प्रथम (व्यक्तित्व सहित) 1.10
- प्रमुख संस्थान 1.14
- राजस्थान के जिलों के उपनाम एवं भौगोलिक उपनाम 1.15
- प्रमुख नगर और उनके संस्थापक 1.17
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 1.18

खण्ड–2
राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत
(History, Art, Culture, Literature, Tradition & Heritage of Rajasthan)

1. राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल (Pre-historical sites of Rajasthan) 2.3-2.11

- पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक 2.3
- कालीबंगा, आहड़, बैराठ, बागोर, निम्बाहेड़ा, गणेश्वर, ओझियाणा, गिलूण्ड, मण्डपिया 2.3
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.11

2. ऐतिहासिक राजस्थान के प्रमुख स्रोत (Main Source of Historical Rajasthan) 2.12-2.28

- पुरातात्विक स्रोत (अभिलेख, ताम्रपत्र, सिक्के). 2.12
- पुरालेखीय स्रोत 2.22
- संग्रहालय/शोध संस्थान. 2.24
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.28

3. राजस्थान के प्रमुख राजवंश (Rajasthan Major Dynasties) 2.29-2.91

- पौराणिक राजवंश 2.31
- गुर्जर प्रतिहार 2.33
- चौहान वंश (अजमेर, रणथम्भौर, जालौर–कान्हड़देव, हाड़ौती, नाडौल, सिरोही) 2.38
- गुहिल तथा सिसोदिया वंश (रत्नसिंह, हम्मीर, महाराणा साँगा, महाराणा प्रताप) 2.48
- कच्छवाहा वंश (आमेर, अलवर एवं शेखावाटी के कच्छवाहा) 2.65

- राठौड़ वंश (मारवाड़ के राठौड़-मालदेव, राव चन्द्रसेन, बीकानेर के राठौड़-रायसिंह) 2.73
- भाटी वंश, जाट वंश 2.83
- परमार वंश एवं यादव वंश, टोंक का इतिहास 2.85
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.89

4. मध्यकालीन प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था 2.92-2.108
(Medival Administrative and Revenue System)

- प्रशासनिक व्यवस्था 2.92
- राजस्व व्यवस्था 2.100
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.108

5. प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति 2.109-2.129
(Society, Religion and Culture in Ancient Rajasthan)

- समाज 2.109
- राजस्थानी खानपान 2.111
- सामाजिक बुराइयाँ 2.112
- राजस्थान के प्रमुख साके 2.114
- प्रमुख रीति-रिवाज 2.115
- विशिष्ट जातियाँ (पशुपालक, संगीतजीवी, हस्तशिल्प, कृषक, सेवक जातियाँ) 2.119
- जनजातियाँ एवं आदिवासी परम्पराएँ 2.122
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.129

6. आधुनिक राजस्थान का उदय 2.130-2.140
(Emergence of Modern Rajasthan)

- 19वीं-20वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में सामाजिक जागृति के कारक 2.130
- ब्रिटिश आधिपत्य 2.130
- 1857 की क्रांति 2.134
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.140

7. राजनीतिक जागरण (Political Awakening) 2.141-159

- स्वतंत्रता संघर्ष के चरण 2.141
- स्वतंत्रता सेनानी 2.142
- स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएँ 2.149
- समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका 2.151
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.159

8. किसान एवं जनजाति आंदोलन 2.160-2.172
(Peasant and Tribal Movements)

- किसान आन्दोलन 2.160
- जनजाति आन्दोलन (भील एवं मीणा आन्दोलन) 2.169
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.172

9. प्रजामण्डल आन्दोलन (Prajamandal Movements) 2.171-2.183

- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.183

10.राजस्थान का एकीकरण (Political Integration of Rajasthan) 2.184-2.190

- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.190

11. राजस्थान में धार्मिक जीवन (Religious Life in Rajasthan) 2.191-2.215

- लोक देवता 2.192
- लोक देवियाँ 2.197
- लोक संत एवं सम्प्रदाय 2.203
- लोक संत महिलाएँ 2.212
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.214

12. राजस्थान में सामाजिक जीवन : मेले (Social Life in Rajasthan : Fairs) 2.216-2.223

- पर्यटन विभाग एवं राज्य मेला प्राधिकरण के मेले 2.222
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.223

13. राजस्थान के प्रमुख त्योहार (Major Festivals of Rajasthan) 2.224-2.231

- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.231

14. वेशभूषा एवं आभूषण, सामाजिक परम्पराएँ 2.232-2.246
(Attires and ornaments, Social traditions)

- वेशभूषा, परिधान 2.232
- आभूषण 2.234
- लोकजीवन शब्दावली एवं आदिवासी परम्पराएँ 2.238
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.246

15. प्रदर्शन कला (Performing Art) 2.247-2.260

- शास्त्रीय संगीत 2.247
- लोक संगीत 2.249
- लोक वाद्य यंत्र 2.253
- लोक गायन एवं वादन की विभूतियाँ 2.257
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.260

16. लोक नृत्य (Folk Dances) 2.261-2.267

- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.267

17. लोक नाट्य (Folk Theatre) 2.268-2.272

- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.272

18. लोक कलाएँ (Folk Arts) 2.273-2.278
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.278

19. चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ (Various schools of paintings) 2.279-2.287
- चित्रकला स्कूल 2.279
- प्रमुख शैलियों के चित्रकार 2.285
- पुरुष एवं महिला चित्रकार 2.286
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.287

20. हस्तशिल्प (Handicraft) 2.288-2.298
- हस्तशिल्पों का भौगोलिक चिह्नीकरण 2.294
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.298

21.राजस्थान की वास्तु परम्परा (Architectural Tradition of Rajasthan) 2.299-2.342
- राजस्थान में वास्तु परम्परा का विकास 2.299
- किले/दुर्ग 2.301
- स्तम्भ एवं मीनारें 2.315
- महल 2.316
- हवेलियाँ 2.321
- मानव निर्मित जलीय संरचनाएँ : बावड़ियाँ 2.322
- छतरियाँ 2.323
- मन्दिर 2.325
- मस्जिद एवं मकबरें 2.339
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.341

22. राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ (Rajasthani Language and Dialects) 2.343-2.352
- राजस्थानी लिपि : मुड़िया एवं देवनागरी 2.345
- राजस्थानी भाषा की प्रमुख शैलियाँ एवं बोलियाँ 2.348
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.352

23. राजस्थानी साहित्य (Rajasthani literature) 2.353-2.394
- लोककथा/लोकगाथा 2.353
- साहित्य का विकास (प्रारम्भिक काल, पूर्व मध्यकाल, उत्तरमध्यकाल एवं आधुनिक काल) 2.359
- प्रमुख लेखक, कवि एवं उनकी कृतियाँ 2.368
- राजस्थान की प्रसिद्ध कृतियाँ 2.378
- राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार 2.382
- बिहारी पुरस्कार, साहित्य अकादमी में राजस्थानी भाषा पुरस्कार 2.390
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.393

24. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व (Leading Personalities of Rajasthan). 2.395-2.412
- खिलाड़ी 2.395
- कलाकार 2.397

- अन्य व्यक्तित्व (सुजस राजस्थान) 2.397
- मध्यकाल में महिलाएँ 2.399
- आधुनिक काल में महिलाएँ (कलाकार, खिलाड़ी, राजनीतिज्ञ एवं अन्य महिला व्यक्तित्व) 2.402
- पद्म अलंकरणों से सम्मानित व्यक्ति 2.407
- राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद 2.410
- महाराणा प्रताप एवं गुरू वरिष्ठ पुरस्कार 2.410
- महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन पुरस्कार 2.411
- राजस्थान रत्न पुरस्कार 2.411
- अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित राजस्थानी खिलाड़ी 2.412
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 2.412

खण्ड–3

राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

(Political and Administrative System of Rajasthan)

1. राज्यपाल (Governor). 3.3-3.10
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.10

2. मंत्रि-परिषद् एवं मुख्यमंत्री (Council of Minister & Chief Minister). 3.11-3.16
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.16

3. राज्य विधानमण्डल (StateLegislature). 3.17- 3.42
- विधानसभा एवं विधान परिषद के संवैधानिक प्रावधान 3.17
- राजस्थान विधानसभा कार्य संचालन एवं प्रक्रिया 3.28
- राजस्थान विधानसभा की समितियाँ 3.33
- राजस्थान विधानसभा अतीत से वर्तमान तक 3.35
- संसद में राजस्थान 3.39
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.41

4. उच्च न्यायालय (High Court). 3.43-3.48
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.48

5. राज्य सचिवालय एवं मुख्य सचिव (State Secretariat and Chief Secretary) 3.49-3.55
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.55

6. जिला स्तरीय प्रशासन (District Level Administration) 3.56-3.85
- जिलाधीश 3.56
- पुलिस प्रशासन : पुलिस अधीक्षक की भूमिका 3.61
- राजस्थान में भूमि सुधार एवं भूमि-प्रबन्ध नीति 3.63
- राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1956 ..... 3.64
- भू-राजस्व अधिनियम-1956 ..... 3.73

• स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.85

7. स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज संस्थाएँ..... 3.86-3.106
(Local Self Government and Panchayati Raj Institutions)

• पंचायती राज के संवैधानिक प्रावधान 3.86
• राजस्थान में पंचायती राज अधिनियम 3.90
• नगरीय निकाय के संवैधानिक प्रावधान 3.99
• राजस्थान में नगरीय प्रशासन 3.101
• जिलेवार नगरीय निकायों का वर्गीकरण 3.104
• स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.105

8. विभिन्न आयोग एवं संस्थाएँ (Various Commission and Institution) 3.107-3.127

• राजस्थान लोक सेवा आयोग 3.107
• राज्य मानवाधिकार आयोग 3.111
• राज्य निर्वाचन आयोग 3.114
• राज्य वित्त आयोग 3.116
• राज्य सूचना आयोग 3.117
• राज्य महिला आयोग 3.119
• महालेखाकार एवं लोकायुक्त 3.120
• अन्य महत्त्वपूर्ण आयोग एवं संस्थाएँ 3.124
• स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.126

9. लोक नीति, विधिक अधिकार एवं नागरिक अधिकार पत्र 3.128-3.146
(Public Policy, Legal Rights and Citizen Charter)

• लोकनीति (Public Policy) 3.128
• विधिक अधिकार (जन सुनवाई, लोक सेवा गारन्टी, उपभोक्ता संरक्षण, सूचना अधिकार) 3.129
• नागरिक अधिकार पत्र 3.141
• सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit) 3.142
• प्रशासनिक सुधार 3.144
• स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 3.146

खण्ड-4

राजस्थान का भूगोल

(Geography of Rajasthan)

1. प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएँ..... 4.3-4.25
(Major physiographic divisions and it's features)

• स्थिति एवं विस्तार (Location and Extention) 4.3
• प्राकृतिक एवं भौगोलिक भू-भाग (Natural and Geographical Divisions). 4.9

- भू-गर्भिक संरचना. 4.18
- पर्वत और पठार (Mountains and Plateau). 4.21
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.23

2. जलवायु (Climate) 4.26-4.33
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.33

3. मृदा संसाधन (Soil Resource) 4.34-4.40
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.40

4. प्रमुख नदियाँ एवं झीलें (Major Rivers and Lakes) 4.41-4.56
- अपवाह तंत्र - नदियाँ (Rivers) 4.41
- झीले (Lakes) 4.50
- बाँध (Dam) 4.53
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.55

5. प्राकृतिक वनस्पति एवं वन (Natural Vegetation and Forests) 4.57-4.67
- वन विभाग की नई रिपोर्ट 2020-21 ..... 4.57
- वनों का वर्गीकरण, चर्चत वनस्पति 4.59
- वन विकास योजनाएँ एवं वानिकी पुरस्कार 4.63
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.66

6. जैव विविधता एवं इनका संरक्षण (Bio-diversity and it's Conservation) 4.68-4.79
- राजस्थान में जैव विविधता 4.68
- राजस्थान में टाइगर रिजर्व 4.71
- राष्ट्रीय उद्यान (National Parks) 4.72
- वन्य जीव अभयारण्य एवं आखेट निषिद्ध क्षेत्र, कन्जर्वेशन रिजर्व, वन्यजीव शुभंकर 4.73
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.78

7. सूखा-अकाल एवं मरुस्थलीकरण (Drought-Famines & Desertification) 4.80-4.85
- सूखा-अकाल (Drought-Famines) 4.80
- मरुस्थलीकरण (Desertification) 4.81
- मरुस्थलीकरण रोकने हेतु सरकारी कार्यक्रम 4.83
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.85

8. मुख्य सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें 4.86-4.103
(Major irrigation projects and Water Conservation Techniques)
- सिंचाई साधन एवं परियोजनाएँ 4.86
- सिंचाई से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम 4.96
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.101

9. खनिज : धात्विक-अधात्विक (Minerals : Metallic and Non-Metallic) 4.104-4.118
- नई खनिज नीति 4.105

- खनिजों में नवाचार 4.113
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.116

10. जनसंख्या (Population) 4.119-4.141

- जनसंख्या वृद्धि रोकने हेतु सरकारी कार्यक्रम 4.120
- जनगणना 2011 – वृद्धिदर, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता... **(अन्तिम आँकड़े)**. 4.123
- धार्मिक जनगणना, ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या, कार्यशील जनसंख्या 4.130
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या 4.138
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.140

11. मुख्य उद्योग (Major Industries) 4.142-4.169

- नई उद्योग नीति. 4.143
- उद्योगों का वर्गीकरण 4.145
- औद्योगिक विकास हेतु राज्य सरकार के प्रयास 4.154
- लघु उपक्रम एवं वित्तीय संस्थाएँ (R.F.C., RIICO) 4.157
- सेज : एक दृष्टि में 4.160
- सार्वजनिक उपक्रम 4.163
- प्रमुख कारखाने 4.166
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.167

12. ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर-परम्परागत 4.169-4.182
(Energy Resources : Conventional and Non - Conventional Sources)

- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.181

13. पर्यटन स्थल एवं परिपथ (Tourist Places and Circuit) 4.182-4.188

- पर्यटन परिपथ 4.184
- नवीन पर्यटन नीति 2020 ..... 4.184
- इको ट्यूरिज्म पॉलिसी 2021 ..... 4.185
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.188

खण्ड–5

राजस्थान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

(Science and Technology in Rajasthan)

1. राजस्थान में कृषि, उद्यानिकी एवं वानिकी 5.3-5.39
(Agriculture, Horticulture and Forestry in Rajasthan)

- कृषि जलवायु क्षेत्र (Agro Climate Zone) 5.6
- प्रमुख फसलें : गेहूँ, मक्का, जौ, कपास, गन्ना, बाजरा आदि 5.8
- राजस्थान कृषि प्रसंस्करण, कृषि निर्यात प्रोत्साहन नीति 2019 ..... 5.14
- कृषि, उद्यानिकी एवं वानिकी विकास हेतु सरकारी कार्यक्रम एवं नवाचार 5.16
- उद्यानिकी 5.25

- कृषि विकास संस्थाएँ 5.28
- सहकारिता (कृषक योजनाओं सहित) 5.30
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 5.37

2. राजस्थान में पशुपालन 5.40-5.56
(Animal Husbandry in Rajasthan)

- 20वीं पशुगणना रिपोर्ट 5.40
- पशुधन का प्रादेशिक वितरण एवं उनके प्रमुख क्षेत्र 5.42
- प्रमुख नस्लें 5.43
- पशु मेले 5.46
- पशुपालन विकास हेतु सरकारी प्रयास 5.47
- डेयरी विकास 5.51
- मत्स्य पालन 5.53
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 4.55

3. राजस्थान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास 5.57-5.68
(Development of Science and technology in Rajasthan)

- राजस्थान के प्रमुख वैज्ञानिक 5.57
- विज्ञान एव प्रौद्योगिकी के विकास हेतु राज्य सरकार के प्रयास 5.58
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 5.68

खण्ड-6

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

(Economy of Rajasthan)

1. संवृद्धि, विकास एवं आयोजना 6.3-6.15
(Growth, Development and Planning.)

- आर्थिक संवृद्धि एवं विकास 6.3
- सतत् विकास गोल्स 6.6
- आयोजना (12वीं पंचवर्षीय योजना सहित) 6.9
- वार्षिक योजना : 2021-22 ..... 6.14
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 6.15

2. आधारभूत संरचना एवं संसाधन 6.16-6.52
(Infrastructure & Resources)

- परिवहन 6.16
- मानव संसाधन : **शिक्षा** - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ..... 6.16
- **स्वास्थ्य** - चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना, कोविड-19 सहित 6.38
- **पोषण** -मिड-डे मील, इंदिरा रसोई योजना 6.47
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 6.51

3. प्रमुख विकास परियोजनाएँ 6.53-6.68
(Major Development Projects)
- शहरी विकास योजनाएँ 6.53
- ग्रामीण विकास योजनाएँ 6.59
- क्षेत्रीय विकास योजनाएँ 6.63
- विकास की अन्य महत्त्वपूर्ण योजनाएँ 6.64
- राजस्थान में संचालित बाह्य सहायता प्राप्त योजनाएँ 6.66
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 6.68

4. कार्यक्रम तथा योजनाएँ 6.69-6.100
(Programmes and Schemes)
- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति 6.69
- पिछड़ा वर्ग कल्याण 6.72
- विशेष योग्यजन कल्याण (निशक्तजनों, निराश्रितों) 6.74
- अल्पसंख्यक कल्याण 6.77
- महिलाएँ कल्याण 6.79
- बाल कल्याण 6.90
- वृद्धजन कल्याण 6.95
- श्रमिकों के लिए राजकीय कल्याणकारी योजनाएँ 6.97
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 6.99

5. गरीबी एवं बेरोजगारी 6.101-6.114
(Poverty and Unemployment)
- बेरोजगारी सर्वेक्षण रिपोर्ट 2020, निर्धनता रिपोर्ट 6.101
- गरीबी एवं बेरोजगारी उन्मूलन हेतु सरकारी योजनाएँ 6.105
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 6.113

6. कृषि, उद्योग व सेवा क्षेत्र के मुद्दे 6.115-6.119
(Major Agricultural, Industrial and Service Sector Issues)
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 6.119

7. अर्थव्यवस्था का वृहत परिदृश्य (Macro overview of Economy of Rajasthan) ... 6.120-6.130
- राजस्थान की अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ 6.120
- आर्थिक विकास के सूचक 6.122
- सार्वजनिक निजी सहभागिता 6.127
- राज्य की आय के स्रोत 6.129
- स्वयं का मूल्यांकन करें [Examination Focus with RAS & Assistant Professor] 6.130

नोट : राजस्थान समसामयिकी हेतु परीक्षा से 15 दिन पूर्व प्रकाशित **'दिशा राजस्थान टूडे'** विशेषांक का अध्ययन अवश्य करें, जो हमारी **वेबसाइट www.dishaprakashan.com** पर निःशुल्क उपलब्ध रहेगी।

1 राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल

(Pre historic Sites of Rajasthan)

(पुरा पाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक)

राजस्थान के पुरातात्त्विक स्थल : एक दृष्टि में

क्र.स.	संस्कृति काल	स्थल	औजार-उपकरण	जीवन शैली
1.	**पुरा पाषाण काल** 24000 ई.पू. से 10000 ई.पू. तक	डीडवाना (सबसे प्राचीन स्थल), जायल (नागौर), विराटनगर (जयपुर), भानगढ़ (अलवर), इन्द्रगढ़ (बूँदी), दर (भरतपुर)	हैण्डएक्स, चॉपर चॉपिंग क्लीवर (गंडासा)	यायावरी जीवन आखेटक, खाद्य संग्राहक, आग से परिचय
2.	**मध्यपाषाण काल** (माइक्रोलिथिक) 10000 ई.पू. से 5000 ई.पू. तक	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बाड़मेर), विराटनगर (जयपुर)	स्क्रेपर, प्वांइट (सूक्ष्म पाषाण युग)	पशुपालन सीखना, आखेटक एवं खाद्य संग्राहक
3.	**नवपाषाण काल** (नियो-लिथिक) 5000 ई.पू.- ...	आहड़ (उदयपुर), गिलूण्ड (राजसमन्द), कालीबंगा (हनुमानगढ़), झर (जयपुर - डॉ. बी. आलचिन द्वारा खोज)	सेल्ट, बसूला, कुल्हाड़ी	बस्ती में स्थायी जीवन, **पहिए का आविष्कार** (चाक निर्माण)
4.	**पाषाण काल** (Stone Age)	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बाड़मेर) व उपर्युक्त स्थल	विविध उपकरण	कृषि कार्य, मृदभाण्ड कला व ताम्र से परिचय
5.	**ताम्रपाषाण काल** (Copper Stone Age)	आहड़, झाड़ोल, बालाथल (उदयपुर) नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथबाड़ी (जयपुर) साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ा पुष्कर (अजमेर), कुराड़ा, परबतसर (नागौर), पिण्ड पाड़लिया (चित्तौड़), कोल माहौली (सवाई माधोपुर), मलाह (भरतपुर), ओझियाना एवं लाछूरा (भीलवाड़ा) गणेश्वर (सीकर), बेणेश्वर(डूँगरपुर)आदि	विविध उपकरण	स्थायी जीवन
6.	**लौह युगीन** (Iron Age)	नोह (भरतपुर), विराटनगर, जोधपुरा, सांभर (जयपुर), सुनारी (झुँझुनूँ), रैढ़, नगर, नैनवा (टोंक),भीनमाल (जालौर),तरखानवालों का डेरा, चक-84(गंगानगर),नगरी(चित्तौड़गढ़)	विविध उपकरण	**सर्वप्रथम मानव ने ताँबे का प्रयोग किया,** उसके बाद काँसे तथा सबसे बाद में लोहे का प्रयोग किया।

कालीबंगा (हनुमानगढ़)

❐ राजस्थान के उत्तर में हनुमानगढ़ जिले में भादरा से 125 कि.मी. पूर्व, कालीबंगा स्थान पर हड़प्पाकालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं। यहाँ पर **काली चूड़ियाँ** अधिक मिली हैं। इसलिये यह कालीबंगा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सबसे पहले **सन् 1950 ई.** (राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा-12 के अनुसार 1951 ई.) में **अमलानन्द घोष के नेतृत्व में खुदाई** का कार्य प्रारम्भ हुआ। इसके बाद **बी. के. थापर एवं बी. बी. लाल** के नेतृत्व में भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने खुदाई का कार्य सन् **1961 ई. में** शुरू किया, जो सन् 1969 ई. तक चलता रहा। बी. के. थापर ने रेडियो कार्बन विधि से इस सभ्यता का समय 2300 ई. पू. निर्धारित किया।

- **कालीबंगा स्वतंत्र भारत का वह पहला पुरातात्त्विक स्थल** है जिसका स्वतंत्रता के बाद पहली बार उत्खनन किया गया तत्पश्चात रोपड़ का उत्खनन किया गया। हरियाणा में राखीगढ़ी एवं गुजरात में धौलावीरा के बाद राजस्थान में कालीबंगा देश का तीसरा सबसे बड़ा पुरातात्विक स्थल है। **इतिहासवेत्ता दशरथ शर्मा ने** कालीबंगा को सिन्धु घाटी साम्राज्य की **तृतीय राजधानी कहा है।**
- कालीबंगा के टीलों की खुदाई के दौरान दो भिन्न कालों की सभ्यता प्राप्त हुई है। **पहला भाग** 2400 ई. पू. से 2250 ई. पू. का है तथा **दूसरा भाग** 2200 ई. पू. से 1700 ई. पू. का है। **यहाँ सरस्वती व दृषद्वती नदियों की घाटियों में** हड़प्पाकालीन विकसित सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। **सरस्वती नदी को आजकल घग्घर नदी कहते है।** यहाँ पर 12 मीटर ऊँचे और आधा किलोमीटर क्षेत्र के 2 टीलों की खुदाई की गयी। यह सभ्यता उत्तर से दक्षिण 250 मीटर तथा पूर्व से पश्चिम तक 80 मीटर तक फैली हुई थी।
- पूर्व हड़प्पाकालीन इस स्थल से **सबसे पहले हल के द्वारा जुताई** के अवशेष **दक्षिण-पूर्वी भाग** में मिले हैं। **एक ही खेत में दो तरह की फसलों को एक साथ उगाया जाता था,** कम दूरी के साँचों में चना या अधिक दूसरी के साँचों में सरसों बोई जाती थी।
- यहाँ से एक दुर्ग, जुते हुए खेत, सड़कें, बस्ती, गोल कुओं, नालियों, मकानों व धनी लोगों के आवासों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। कमरों में ऊपर की ओर छेद किए हुए किवाड़ व मुद्रा पर व्याघ्र का अंकन एकमात्र इसी स्थल पर मिला है। कालीबंगा से **सात अग्निवेदियाँ** प्राप्त हुई हैं। यहाँ प्राप्त सिन्धु घाटी पुरावशेषों के संरक्षण हेतु एक संग्रहालय की स्थापना की गयी है।
- खुदाई में सीसा, कपड़े के टुकड़े अनेक प्रकार की चूड़ियाँ, खिलौने, पहियेदार गाड़ी व तांबे के औजार मिले हैं। नाप-तोल बाँट, तांबे का बैल्ट, हाथीदाँत का कंघा आदि अनेक वस्तुएँ मिली हैं। यहाँ पर मिट्टी की मोहरें मिली हैं, जिन पर सैन्धव सभ्यता के तुल्य चित्र अंकित है, जो यहाँ की लिपि है। कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यत: उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है। खुदाई में विचित्र बर्तन भी मिले हैं जिन पर फूल, पत्ती, चौपड़, पक्षी, खजूर एवं पशुओं के चित्र खड़िया मिट्टी से चित्रित हैं। अलंकरण के लिए **लाल धरातल पर काले रंग का ज्योमितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है।**
- कालीबंगा में प्राप्त चूल्हे वर्तमान तंदूर के समान थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौ, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था।
- कालीबंगा से मिली माटी की वृषभाकृति तो कलाकौशल की दृष्टि से विशेषरूप से उल्लेखनीय है। इस वृषभ की यह विशेषता है कि इसका सिर इस तरह बनाया गया है कि आवश्यकतानुसार उसे धड़ से अलग किया जा सकता है और उसे पुन: धड़ से जोड़ा जा सकता है। कालीबंगा से प्राप्त बेलनाकार मुहरें मेसोपोटामिया (वर्तमान ईराक) की मुहरों जैसी है। यहाँ पर बच्चे की खोपड़ी मिली है। जिसमें 6 छेद है, इससे जल कपाली या मस्तिष्क शोध की बीमारी का पता चलता है।
- इस काल के लोगों ने समचतुर्भुजाकार रक्षा प्राचीर के अन्दर अपने आवासों का निर्माण किया है। इस सुरक्षा प्राचीर को दो चरणों में बनाने के प्रमाण मिले हैं। रक्षा प्राचीर के अन्दर - बाहर दोनों ओर से मिट्टी का लेप किया गया है। कालीबंगा में दो टीले विद्यमान हैं। पश्चिम के छोटे एवं अपेक्षाकृत ऊँचे टीले को **'गढ़ीक्षेत्र' (दुर्ग)** कहा जाता है तथा बड़े एवं अपेक्षाकृत निचले टीले को नगर क्षेत्र। दोनों को अलग-अलग सुरक्षात्मक दीवार (परकोटे) से सुरक्षित किया गया था। **दुर्ग क्षेत्र का ऐसा द्विभागीकरण किसी अन्य सैंधव स्थल पर नहीं मिला है।**
- कालीबंगा सभ्यता 5 स्तर में विभाजित है। इसमें दो बहुत प्राचीन है। दो बाद में बने विदित होते है। प्रथम व द्वितीय काल तो हड़प्पा से भी पहले का आंका जाता है। यहाँ प्राप्त मकान कच्ची ईंटों से बने हुये है। मकान हवादार एवं दो ओर की सड़क से जुड़े हुये होते थे। साधारणत: मकानों में दालान तथा चार या पाँच बड़े कमरे होते थे। गन्दे पानी को निकालने के लिए गोलाकार भाण्ड होते थे। मकानों की नालियाँ, शौचालय, भट्टियों एवं कुछ संरचनाओं में पकी ईटों का प्रयोग किया गया है। **कालीबंगा का एक फर्श पूरे हड़प्पा काल का एकमात्र ऐसा उदाहरण है जहाँ अलंकृत ईटों का प्रयोग हुआ है।** सड़कों की चौड़ाई 1.8 मीटर से 7.2 मीटर थी। चार मुख्य सड़कें उत्तर से दक्षिण और तीन पूर्व से पश्चिम को जाती थी। मकानों में चूल्हों के अवशेष भी मिले हैं। यहाँ पर एक गढ़ी मिली है जिसकी ऊँचाई 30.7 मीटर थी। 40×20×10 सेमी. की मोटी ईंट काम में आती थी।

- यहाँ पर तीन प्रकार की कब्रें मिली हैं, जो आयताकार, गोलाकार एवं हांडियों के आकार की हैं। 1750 ई. पू. तक यह सभ्यता फलती-फूलती रही। सम्भवत: कच्छ के रन के रेत से भर जाने के कारण यह सभ्यता नष्ट हो गयी। वर्षा के अभाव में यह स्थान मरुस्थल बनता गया।

(सन्दर्भ-इण्डियन आर्कियोलोजीकाल-ए रिव्यू)

आहड़ (उदयपुर)

- इस स्थल के उत्खनन का कार्य सर्वप्रथम 1953 में **अक्षय कीर्ति व्यास** के नेतृत्व में हुआ। 1954 ई. में रत्नचन्द्र अग्रवाल तथा 1961-62 ई. में हँसमुख धीरजलाल बांकलिया के नेतृत्व में इस स्थल का उत्खनन करवाया गया। यह सभ्यता आज से लगभग 4000 वर्ष प्राचीन हैं। डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने आहड़-सभ्यता का समृद्ध काल 1900 ई.पू. से 1200 ई.पू. तक माना है।
- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम **'ताम्रवती'** अंकित है। ताँबे के उपकरणों की प्रचुरता के कारण इसे प्राचीनकाल में **ताम्रनगरी** कहा जाता था। दसवीं व ग्याहरवीं शताब्दी में आहड़ को **'आघाटपुर'** अथवा 'आघट दुर्ग' के नाम से जाना जाता था। इसे **स्थानीय भाषा में 'धूलकोट'** भी कहा जाता है। उदयपुर से तीन किलोमीटर दूर **बनास एवं बेड़च नदी के पास** धूलकोट के नीचे आहड़ का पुराना कस्बा दबा हुआ है जहाँ से ताम्र युगीन सभ्यता प्राप्त हुई है।
- आहड़ का सम्पूर्ण कालक्रम दो कालखण्डों में बाँटा जा सकता है - प्रथम कालखण्ड 'ताम्रयुगीन' व द्वितीय कालखण्ड 'लौहयुगीन' सभ्यता के द्योतक है।
- आहड़ ताम्रधातु कर्मी थे। यहाँ ताम्र उपकरण, बर्तन, काले व लाल रंग के मृद्भाण्ड आदि प्राप्त हुए हैं। काले एवं लाल रंग के मृद्पात्रों का उपयोग करते थे। यहाँ अनाज रखने के बड़े भाण्ड भी मिले हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में **'गोरे और कोठे'** कहा जाता था। आहड़ के विशिष्ट आकृति के बर्तनों को **'ब्लेक एण्ड रेड वेयर' (काले व लाल रंग के मृदभाण्ड)** कहा जाता है।
- आहड़वासियों का महत्त्वपूर्ण व्यवसाय अयस्क **ताँबे का गलाना तथा ताम्र वस्तुएँ बनाना व उपकरण बनाना** था। ये लोग लाल, भूरे व काले मिट्टी के बर्तन काम में लेते थे। यहाँ ताँबे की छ: मुद्रायें व तीन मोहरें मिली है। एक मुद्रा पर एक ओर त्रिशूल तथा दूसरी ओर अपोलो देवता अंकित है जो तीर एवं तरकश से युक्त है। इस पर यूनानी भाषा में लेख अंकित है। यह मुद्रा दूसरी शताब्दी ईस्वी की है। आहड़वासी शव को कपड़ों तथा आभूषणों सहित गाड़ते थे, जिसमें **सिर उत्तर में व पैर दक्षिण** में होते थे।
- यहाँ से टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ मिली है, जिन्हें **'बनासियन बुल'** कहा गया है।
- आहड़वासियों के **आभूषण** अधिकांशत: **पकी हुई मिट्टी के** मणकों के थे, लेकिन कुछ **कीमती पत्थरों (गोमेद, स्फटिक) के** भी थे। खुदाई में दो प्रकार के मणके या मणियाँ प्राप्त हुई है।
- आहड़ के मकानों में एक से अधिक चूल्हे मिले हैं। यहाँ रसोई में **दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे** प्राप्त हुए हैं। यहाँ घर में एक साथ 6 चूल्हे भी प्राप्त हुए हैं।
- आहड़ सभ्यता के लोग कृषि से परिचित थे। ये लोग अन्न का उत्पादन करते थे। आहड़ सभ्यता के लोग **गेहूँ, ज्वार और चावल का खाद्यान्नों के रूप में प्रयोग** करते थे। पशुपालन इनकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था।

बैराठ (जयपुर)

- प्राचीन मत्स्य जनपद की राजधानी विराटनगर (वर्तमान बैराठ) में **'बीजक की पहाड़ी' 'भीम जी की डूँगरी' तथा 'महादेव जी की डूँगरी'** आदि स्थानों पर उत्खनन कार्य **प्रथम बार दयाराम साहनी** द्वारा 1936-37 में तथा पुन: 1962-63 में पुरातत्वविद् नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित द्वारा किया गया। **यह सभ्यता बाणगंगा नदी के मुहाने पर विकसित हुई।**
- **1837 ई. में कैप्टन बर्ट द्वारा यहाँ भाब्रु शिलालेख की खोज की गई** जिसके नीचे ब्राह्मी लिपि में 'बुद्ध-धम्म-संघ' तीन शब्द लिखे हुये है। जिसे वर्तमान में कोलकाता संग्रहालय में रखा गया है। वर्ष 1990 ई. में बैराठ के आस-पास की पहाड़ियों में स्थित शैलाश्रयों में अनेक शैलचित्र खोजे गये।
- सिंधु घाटी सभ्यता के प्रागैतिहासिक काल के समकालीन इस स्थल में **मौर्यकालीन (अशोक के शिलालेख)** एवं मध्यकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसके उत्खनन में 36 मुद्राएँ मिली हैं जिनमें 8 चाँदी की **पंचमार्क मुद्राएँ व 28 इण्डो ग्रीक (जिसमें 16 मुद्राएँ राजा मिनेन्डर की)** मुद्राएँ हैं।

- 1999 में बीजक की पहाड़ी से अशोक कालीन '**गोल बौद्ध मंदिर**', 'स्तूप' एवं '**बौद्ध मठ**' के अवशेष मिले हैं जो हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित हैं, ये भारत के प्राचीनतम मंदिर माने जा सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि यहाँ स्थित भीम की डूँगरी (पाण्डु हिल) के पास पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का अंतिम एक वर्ष छद्मवेश में मत्स्य नरेश विराट राजा की सेवा में व्यतीत किया था।
- यहाँ सूती कपड़े में बंधी मुद्राएँ व पंचमार्क सिक्के मिले हैं। इस क्षेत्र से पुरातात्त्विक सामग्री का विशाल भंडार प्राप्त हुआ है। यहाँ लौह उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस स्थल की खुदाई में मृद्पात्र पर त्रिरत्न व स्वस्तिक अलंकार आदि प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ एक स्वर्ण मंजूषा प्राप्त हुई है, जिसमें भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेष थे। सन् 634 में ह्वेनसांग विराटनगर आया था। उसने यहाँ बौद्ध मठों की संख्या 8 लिखी थी। विराटनगर के मध्य में अकबर ने एक टकसाल खोली थी। इस टकसाल में अकबर, जहाँगीर तथा शाहजहाँ के काल में तांबे के सिक्के ढाले जाते थे। यहाँ एक मुगल गार्डन, ईदगाह तथा कुछ अन्य इमारतें भी बनवाई गई थी।

बागोर (भीलवाड़ा)

- बागोर सभ्यता का उत्खनन स्थल भीलवाड़ा जिले से लगभग 25 किलोमीटर दूर **कोठारी नदी के किनारे स्थित महासतियाँ का टीला** है। **डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र** एवं **डॉ. एल.एस. लेशनि** के नेतृत्व में 1967-68 में उत्खनित किए गए। इस स्थल से **मध्य पाषाणकालीन एवं लघु पाषाणकालीन वस्तुएँ**, उपकरण, हथौड़े, गाय, बैल के अवशेष, **कृषि एवं पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं। इसे '**आदिम संस्कृति का संग्रहालय**' कहा जाता है।
- बागोर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से **तीन चरणों में विभाजित (आखेट, पशुपालन, कृषि)** किये गये है। **प्रथम चरण** 3000 ई.पू. से लेकर 2000 ई. पू. तक, **द्वितीय चरण** 2000 ई.पू. से 500 ई.पू. का तथा **तृतीय चरण** 500 ई.पू. से लेकर प्रथम ई.पू. सदी तक का मानव सभ्यता का काल था। इन पाषाण उपकरणों को स्फटिक (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यत: पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chià¿) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microlighs) थे। यहाँ पाये गये लघु पाषाण उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख है। बागोर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सुई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Sà¿earhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं। इस चरण में उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती हैं इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई.पू. से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में **कृषि की प्रधानता (14 प्रकार की कृषि के अवशेष)** हो गई थी।
- बागोर सभ्यता में **मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन** में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान के लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।
- बागोर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। **मकान पत्थर के बने** हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागोर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है। बागोर उत्खनन में कुल 5 कंकाल प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व - उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।

निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)

- चित्तौड़गढ़ स्थित निम्बाहेड़ा पुरातात्त्विक स्थल **निम्बा एवं कझाली नदी (कदमाली नदी) के किनारे** स्थित है। यह क्षेत्रीय सांस्कृतिक दृष्टि से मालवा व मेवाड़ का संगम स्थल तथा भौगोलिक दृष्टि से पहाड़ी, पठारी व मैदानी स्थल है। निम्बाहेड़ा से 40 किमी. दूर **घारेश्वर के समीप बहने वाली गुंजाली नदी के किनारे** स्थित शैलाश्रयों की लगभग 300 मीटर लम्बी शृंखला में बड़ी संख्या में **प्रागैतिहासिक शैल चित्र** उपलब्ध हुए हैं। घारेश्वर के शैलचित्र आकार व बनावट की दृष्टि से अन्य स्थानों भीम बैठका, अल्मोड़ा से प्राप्त शैलचित्रों की तरह परिष्कृत नहीं है। इसका अर्थ यह है कि यह क्षेत्र **मानव सभ्यता के विकास का आरम्भिक स्तर** माना जा सकता है। यह शैलचित्र प्राकृतिक व अन्य कारणों से नष्ट हो रहे हैं, अत: इनके उचित संरक्षण की आवश्यकता है।
- निम्बाहेड़ा से 15 किमी. दूर **माधाखेड़ी का मंदिर** पुरातात्त्विक दृष्टि से अल्पज्ञात है। यह शिवमंदिर मूर्ति शिल्प की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। निम्बाहेड़ा से 18 किमी. दूर मकनपुरा गाँव के मंदिर के आसपास बिखरे हुए पुरातात्त्विक अवशेष देखे जा सकते हैं।

- निम्बाहेड़ा क्षेत्र में स्थित **बिनोता की बावड़ी, खेड़ा नाहरसिंह माता के मंदिरों** के सम्बन्ध में अध्ययन व अनुसंधान किया गया। चूंकि निम्बाहेड़ा क्षेत्र के पुरातात्त्विक स्रोत का आधार अधिकांशत: भग्नावशेष के रूप में है।

गणेश्वर (सीकर)

- प्राक्हड़प्पा, हड़प्पाकालीन एवं ताम्रयुगीन यह स्थल सीकर जिले के **नीम का थाना तहसील में कांटली नदी के उद्गम स्थल पर स्थित** है। इसका उत्खनन 1977 में **रत्न चन्द्र अग्रवाल** और 1978-79 में विजय कुमार ने करवाया।
- ताम्रयुगीन संस्कृतियों में सबसे प्राचीनतम (लगभग 2800 वर्ष ई. पू.) यह स्थल **ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी कहा जाता** है। यहाँ जून, 2006 में खुदाई के दौरान ढेर सारी ताम्र वस्तुएँ एक ही स्थान पर मिली है। खुदाई के दौरान 50 से अधिक पुरास्थल, ताम्र की चद्दर से बनाये गये 1000 तीर तथा करीब 2000 ताम्र उपकरण भी मिले है।
- उल्लेखनीय है कि प्राचीन समय में गणेश्वर से ही हड़प्पा में ताम्र की वस्तुएँ भेजी जाती थी और इसके बदले में यहाँ के निवासियों को अनाज मिलता था।
- गणेश्वर के उत्खनन से कई सहस्त्र ताम्र आयुध व ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं। इनमें कुल्हाड़े, तीर, भाले, सुइयाँ, **मछली पकड़ने के काँटे,** चूड़ियाँ व विविध ताम्र आभूषण प्रमुख हैं। इस सामग्री में 99 प्रतिशत तांबा है। ताम्र आयुधों के साथ लघु पाषाण उपकरण मिले हैं, गणेश्वर से जो मृदपात्र प्राप्त हुए हैं, वे कृपिषवर्णी मृदपात्र कहलाते है। मृद्पात्रों में प्याले, तश्तरियाँ व कूंडियाँ प्रमुख हैं। शिकार के साथ पशुपालन भी प्रारम्भ हो चुका था तथा इस समय लोग मृद् भांड कला में विशेष रूप से सिद्ध-हस्त थे।

ओझियाना

- ताम्रयुगीन आहड़ संस्कृति से संबंधित यह पुरातात्विक स्थल भीलवाड़ा जिले में बदनोर के पास स्थित है। यहाँ **बी. आर. मीणा व आलोक त्रिपाठी** ने सन् 2000 ई. में उत्खनन करवाया। यहाँ से प्राप्त गाय की लघु मीणकृति (मृण्मूर्ति) बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह स्थल आहड़ सभ्यता-संस्कृति का ही एक अन्य स्थल है। इसकी एक विशिष्टता यह है कि यह पहाड़ी पर स्थित है जबकि आहड़ सभ्यता के अन्य स्थल नदी घाटियों में पनपे थे। उत्खनन में प्राप्त मृद्भाण्डों एवं भवन के ढाँचों के अवशेषों के आधार पर इस स्थल पर तीन चरणों की सभ्यताओं के प्रमाण मिले हैं -
  - **प्रथम स्तर (First Phase)** में प्राप्त अवशेषों से ज्ञात होता है कि इस काल में लोग कृषक थे जो पहाड़ी पर रहना पसंद करते थे। इस समय के काले एवं लाल रंग के मृदभाण्डों पर सफेद रंग में चित्रण किया गया है। इनके मकान कच्ची ईंटों के बने हुए थे।
  - **द्वितीय स्तर (Second Phase)** के अवशेषों से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता के निवासी अब भवन निर्माण में मिट्टी की ईंटों के साथ-साथ पत्थरों का उपयोग भी करने लगे थे। मकान में कई कमरे व रसोई के अवशेष मिले हैं।
  - **तृतीय स्तर (Third Phase)** में प्राप्त मृद्भाण्डों को पकाने की विधि उसे प्रथम दो स्तरों से अलग करती है।
- खुदाई में बड़ी मात्रा में कई आकार-प्रकार में मिट्टी के बैलों की आकृतियाँ मिली हैं जिन पर की गई सफेद रंग की चित्रकारी इस सभ्यता को तत्कालीन अन्य सभ्यताओं से अलग करती है। ये सफेद चित्रित बैल 'ओझियाना बुल' नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थल पर प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर अनुमान है कि इस सभ्यता का काल 2500 ई. पूर्व से 1500 ई. पूर्व का रहा होगा।

गिलूण्ड

- राजसमंद जिले में बनास नदी के तट से कुछ दूरी पर स्थित **ताम्रयुगीन सभ्यता का नवपाषाणकालीन पुरातात्त्विक स्थल गिलूण्ड** का उत्खनन **श्री बी. बी. लाल द्वारा 1957-58 ई.** में करवाया गया। खुदाई में ताम्रयुगीन सभ्यता एवं बाद की सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं। यह स्थल आहड़ सभ्यता स्थल से लगभग 30 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ भी आहड़ युगीन सभ्यता का प्रसार था। यहाँ चूने के प्लास्टर एवं कच्ची दीवारों का प्रयोग होता था।
- गिलूण्ड में काले एवं लाल रंग के मृदभाण्ड मिले हैं। इस स्थल पर 100×80 फीट आकार के एक विशाल भवन के अवशेष मिले हैं जो ईंटों से बना हुआ है। आहड़ में इस प्रकार के भवनों के अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं। आहड़ में पक्की ईंटों के प्रयोग के साक्ष्य नहीं मिले हैं जबकि गिलूण्ड में पक्की ईंटों का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। इसी प्रकार आहड़ के मृद्पात्रों को केवल ज्यामितीय अलंकरणों से चित्रित किया गया था जबकि गिलूण्ड के मृदपात्रों पर ज्यामितीय चित्रांकन के अलावा प्राकृतिक चित्रांकन भी किया गया है।

टोंक के पास नगर फोर्ट के समीप टीलों के नीचे मिला शहर

☞ **उणियारा कस्बे के पास स्थित स्थल जिसका प्राचीन नाम मालव नगर था।** टोंक के पास नगर फोर्ट के दूर-दूर तक फैले टीलों के मैदान के नीचे 20-25 फीट नीचे बसे इस शहर की खोज करीब 150 साल पहले अंग्रेज पुरातत्वविद् **एसीएल कर्लाईली** ने की थी। यहाँ 2200 साल पहले ऐसा नगर था, जिसमें हजारों लोग रहते थे। यह सम्भवत: तत्कालीन मालवा राजधानी थी। कर्लाईली ने नगर में मिले सिक्कों के आधार पर अनुमान लगाया है कि मुचुकुन्द ने नगर पर हमला कर वहाँ अपना अलग राज्य बनाया। कर्लाईली के मुताबिक वास्तव में इस शहर की स्थापना नाग वंश के लोगों ने की थी और यहाँ के मूल निवासी करकोट नागा थे। इस स्थल का **प्राचीन नाम करकोटा/कार्कोट** नगर था। कर्लाईली को यहाँ ऐसे सिक्के भी मिले थे, जिन पर नागवाहा महाजया और नागवाहा जया लिखा था। इसीलिए इस शहर का नाम नागवाड़ा से अपभ्रंश होते हुए नगर पड़ा। **यहाँ बहुसंख्यक मात्रा में आहत मुद्राएँ एवं मालव सिक्के प्राप्त हुए है।**(स्रोत : राजस्थान पत्रिका, 11 मार्च, 2018)

अन्य पुरातात्त्विक स्थल - एक दृष्टि में

☞ **बालाथल (उदयपुर)**	उदयपुर शहर से लगभग 42 किलोमीटर वल्लभनगर तहसील में स्थित इस स्थल से ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त (1993) हुए हैं। बी. एन. मिश्र के नेतृत्व में उत्खनित इस क्षेत्र से कर्णफूल, हार, मृण्मूर्तियाँ व ताँबे के आभूषण प्राप्त हुए हैं। यहाँ से एक दुर्गनुमा भवन भी मिला है तथा ग्यारह कमरों वाला विशाल भवन भी प्राप्त हुआ है। यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है, जिसे भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण माना जाता है। योगी मुद्रा में शवाधान प्राप्त हुआ है।
☞ **ईसवाल (उदयपुर)**	यहाँ एक प्राचीन लौहयुगीन औद्योगिक बस्ती के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस स्थल का उत्खनन कार्य राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के पुरातत्त्व विभाग के निर्देशन में किया गया है। यहाँ पाँच स्तरों में प्राक् ऐतिहासिक काल से मध्यकाल तक का प्रतिनिधित्व करने वाली मानव बस्तियों के प्रमाण मिले हैं।
☞ **रैढ़ (टोंक)**	**'प्राचीन राजस्थान का टाटा नगर'** के नाम से प्रसिद्ध नगर, जो निवाई के समीप स्थित है। यहाँ उत्खनन में एशिया का अब तक का सबसे बड़ा सिक्कों का भंडार तथा बड़ी संख्या में प्राचीन मूर्तियाँ मिली है। **1938-39 ई. में दयाराम साहनी** तथा **1938-40 ई. में** इस सभ्यता का **उत्खनन डॉ. केदारनाथ पुरी** द्वारा किया गया। रैढ़ के उत्खनन में 3075 आहत मुद्रा या पंचमार्क सिक्के भी पाये गये हैं। रैढ़ से आहत मुद्रा के अतिरिक्त **300 मालव जनपद के सिक्के**, 14 मित्र सिक्के, 6 सेनापति सिक्के, 7 वपु सिक्के, एक अपोलोडोट्स का सिक्का, 189 अज्ञात ताम्र सिक्के और इण्डो - सेसेनियन सिक्के प्रमुख है। रैढ़ के उत्खनन में यवन सिक्कों में यूनानी शासक अपोलोडोट्स का एक खण्डित सिक्का मिला है।
☞ **सोथी (बीकानेर)**	अमलानंद घोष के नेतृत्व में 1953 में खुदाई किए गए इस स्थल से हड़प्पायुगीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसे **कालीबंगा-प्रथम** के नाम से भी जाना जाता है।
☞ डाडाथोरा (बीकानेर)	यहाँ हाल ही में लघु पाषाणकाल की पुरातात्त्विक सामग्री प्राप्त हुई है।
☞ रंगमहल (हनुमानगढ़)	सरस्वती नदी किनारे स्थित इस स्थल पर खुदाई का कार्य 1952-54 में डॉ. हन्नारिड़ के नेतृत्व में स्वीडिश दल द्वारा शुरू किया गया। यहाँ खुदाई से मिट्टी के बर्तन, आभूषण, पूजा के बर्तन तथा 105 ताँबे की मुद्राएँ प्राप्त हुई जो ईसा पूर्व प्रथम सदी से 300 ई.के है।
☞ जहाजपुर (भीलवाड़ा)	ऐतिहासिक स्थल जहाँ स्थित बड़ा देवरा (पुराने मंदिरों का समूह), पुराना किला व गैबीपरी मस्जिद दर्शनीय है । हाल ही में यहाँ महाभारतकालीन अवशेष मिले है।

☞ देदवास-देवपुर (भीलवाड़ा)	यहाँ सीसा, जस्ता एवं तांबे के बड़े भण्डारों का पता चला है।
☞ कणसव (कोटा)	यहाँ 738 ई. का एक अभिलेख मिला, जो मौर्यवंशीय राजा 'धवल' से संबंधित है।
☞ तिपटिया (कोटा)	दर्रा वन्य जीव अभयारण्य में स्थित 37000 साल पुराने शैल चित्रों का प्राप्ति स्थल।
☞ **माध्यमिका (चित्तौड़गढ) (वर्तमान नाम-नगरी)**	चित्तौड़गढ़ से 13 किमी. दूर स्थित यह नगर बौद्ध एवं वैष्णव मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ शिवि जनपद के सिक्के, गुप्तकालीन कला के अवशेष मिले है। उत्खननकार्य - सर्वप्रथम 1904 में डॉ. भण्डारकर, श्री सौन्दराजन तथा कालान्तर में (1962 में) केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा किया गया। यूनानी राजा मिनेण्डर ने 150 ई. पूर्व में **मध्यमिका नगरी** को अपने अधिकार में कर अपने राज्य की स्थापना की। इस संदर्भ में गार्गी संहिता एवं पतजंलि के महाभाष्य तथा महाभारत में चर्चा मिलती है इनमें कहा गया है कि यवत पहले कुसुमपुर (पाटलिपुत्र) पर आक्रमण करेंगे तथा उसका विनाश कर वे साकेत व माध्यमिका (नगरी) पर धावा मारेंगे।
☞ **जूनाखेड़ा/नाडोल (पाली)**	पाली के **जूनाखेड़ा/नाडोल** की खोज वर्ष 1883-84 में एच.डब्ल्यू.बी.के. गैरिक ने की थी। राज्य के पुरातत्त्व विभाग द्वारा वर्ष 1889-90 से 1995-96 के दौरान चार सत्रों में उत्खनन कार्य करवाया गया। यह पहला चौहानकालीन नगर है जहाँ इतने विशाल स्तर पर उत्खनन कार्य करवाया गया। एक मिट्टी के बर्तन पर 'शालभंजिका' का अंकन है। मिट्टी की ऐसी शालभंजिका भारत में पहली उपलब्धि है।
☞ **जोधपुरा (जयपुर)**	साबी नदी के किनारे जयपुर जिले की कोटपुतली तहसील के ग्राम जोधपुर के प्राचीन टीले की खुदाई 1972 -73 में राजस्थान पुरातत्त्व विभाग द्वारा श्री आर.सी. अग्रवाल एवं श्री विजय कुमार के निर्देशन में करवाई गई। यह एक ताम्रयुगीन प्राचीन सभ्यता स्थल है। यहाँ मकान की छतों पर टाइल्स का प्रयोग एवं छप्पर छाने का रिवाज था। इस संस्कृति के मानव ने घोड़े का उपयोग रथ के खींचने में करना प्रारंभ कर दिया था।
☞ **किराडोत (जयपुर)**	यहाँ से ताम्रयुगीन 58 चूड़ियाँ मिली हैं। इसमें विभिन्न आकार की 28 चूड़ियों के दो सेट हैं जो सिंधु घाटी सभ्यता में प्रयुक्त की जाती थी। इसी तरह की 28 चूड़ियाँ (दाएँ हाथ में 4 एवं बाएँ हाथ में 24 चूड़ियाँ) मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांस्य की नर्तकी ने पहन रखी थी।
☞ अहेड़ा (अजमेर)	गुप्तकालीन सिक्कों का भण्डार मिला है।
☞ **कुराड़ा (नागौर)**	पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा 1934 में उत्खनन। इससे अन्य ताम्र सामग्री के साथ प्रणालयुक्त अर्ध्यपात्र राजस्थान को भारतीय पुरातत्त्व की विशेष देन है। जो प्राचीन राजस्थान और पश्चिमी एशिया, विशेषत: ईरान से पारस्परिक सम्बन्धों की ओर इंगित करता है।
☞ **मलाह (भरतपुर)**	इस पुरा स्थल से बड़ी संख्या में ताँबे की तलवारें एवं हार्पून (प्रागैतिहासिक काल का वह हथियार जिससे ह्वेल मछली या गैण्डे जैसे बड़े जानवरों का शिकार किया जाता था।) आदि प्राप्त हुई हैं। यह पुरातात्विक स्थल घना केवलादेव अभयारण्य के मध्य स्थित हैं।
☞ **नोह (भरतपुर)**	रूपारेल नदी के किनारे स्थित नोह गाँव में 1963-64 ई. में श्री रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में की गई खुदाई में लौह युगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं। यहाँ से प्रस्तर की **विशालकाय यक्ष प्रतिमा** और चुनार के चिकने पत्थर के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए हैं जिन पर मौर्यकालीन पॉलिस है। यहाँ की खुदाई से एक स्थान से 16 'रिंगवेल' मिले हैं।

☞ **बरोर (गंगानगर)**	गंगानगर जिले में प्राचीन सरस्वती नदी के तटवर्ती इस स्थान पर वर्ष 2003 से किये जा रहे उत्खनन से प्राचीन मानव बस्ती होने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यहाँ प्राप्त हुए पुरावशेषों के आधार पर अनुमान है कि यहाँ प्राक् ऐतिहासिक कालीन, प्रारंभिक हड़प्पाकालीन एवं विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृतियाँ फली-फूली थी। यहाँ उत्खनन में प्राप्त मृद्पात्रों में काली मिट्टी पाई गई है जो अन्य किसी भी पुरातात्विक स्थल से नहीं मिली है। उत्खनन में बटन के आकार की मुहरें एवं सेलखड़ी के लगभग 8000 मनके प्राप्त हुए हैं।
☞ गुरारा (सीकर)	यहाँ चाँदी से बने 2744 पंचमार्क सिक्के मिले है।
☞ इन्द्रगढ़ (बूँदी)	वर्ष 1870 में सी.ए. हैकट ने अरावली की कंदराओं में मानव आश्रय के प्रमाण खोजे।
☞ नूआँ (झुँझुनूँ)	यहाँ हवेली की खुदाई में मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के समय में ईस्ट इंडिया कम्पनी की ओर से जारी एक रुपये मूल्य के चाँदी के हजारों सिक्के मिले हैं।
☞ सुनारी (झुँझुनूँ)	खेतड़ी के पास स्थित इस स्थल में खुदाई (1980-81 में राजस्थान पुरातत्त्व विभाग द्वारा) के दौरान लोहे के अयस्क से लोहा बनाने की प्राचीनतम भट्टियाँ मिली है।
☞ ओला (जैसलमेर)	इस क्षेत्र में 60 हजार से 1 लाख वर्ष पुरानी पाषाण कालीन सामग्री मिली है।
☞ कुंडा (जैसलमेर)	यहाँ उत्खनन के दौरान 5000 वर्ष पुरानी सभ्यता के अवशेष मिले है।
☞ पारेवार व सानू (जैसलमेर)	इस गाँव में चूहे के दाँत के विश्व में प्राचीनतम (9 से 14 करोड़ साल पुराने क्रिटेशियम काल के) जीवाश्म मिले है। राज्य में रीढखम्भधरी श्रेणी के 3 प्रमुख वर्गों स्तनधारी, सरीसृप एवं मत्स्य के जीवाश्मों की यह पहली व्यवस्थित खोज है।
☞ **मंडिया/मण्डपिया** (भीलवाड़ा)	**बनास नदी के** किनारे स्थित पुरापाषाणकालीन स्थल की खोज वीरेन्द्र नाथ मिश्र ने की। यहाँ निम्नपुरापाषाणिक एवं माइक्रोलिथिक उपकरण मिले हैं।

Exam Remainder

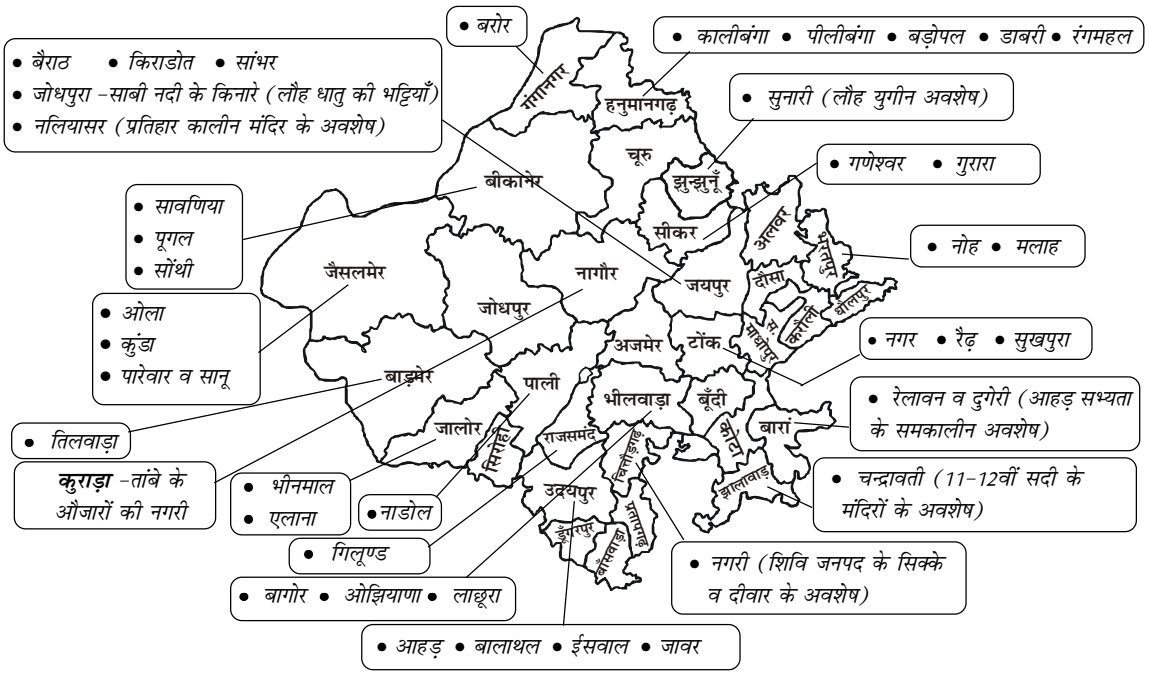

स्वयं का मूल्यांकन करें

[Examination Focus with RAS & Assistant Professor]

- ❒ **प्राचीन नगर जो महाभारत और महाभाष्य दोनों में उल्लेखित हैं** – मध्यमिका नगरी [RAS (Pre) Exam-28.08.2016]
- ❒ **बौद्ध धर्म से सम्बंधित पुरातात्विक अवशेष कहाँ मिले हैं?** – बैराठ [College Lecturer 24.04.2016]
- ❒ **निम्नलिखित में से राजस्थान का कौन सा सैन्धव स्थल घग्घर नदी के किनारे स्थित हैं?** –कालीबंगा [College Lecturer 24.04.2016]
- ❒ **लौहयुगीन सभ्यता है** – नोह (भरतपुर), जोधपुरा (जयपुर), सुनारी (झुँझुनूँ)। [R.A.S. Exam 1996]
- ❒ **ताम्रयुगीन सभ्यता है** – बागोर (भीलवाड़ा), गणेश्वर (सीकर), आहड़ (उदयपुर)। [R.A.S. Exam 1999]
- ❒ **कालीबंगा सभ्यता की खोज सर्वप्रथम किसने की थी** – अमलानंद घोष। [R.A.S. Exam 1994, 97]
- ❒ **कालीबंगा का शाब्दिक तात्पर्य है** – काली चूड़ियाँ। [R.A.S. Exam 1996, 99]
- ❒ **मौर्य सभ्यता के प्रमाण किस स्थान पर उपलब्ध है** – जयपुर। [R.A.S. Ex. 94, R.A.S. Ex. 98]
- ❒ **4000 वर्ष पुरानी सभ्यता के पुरातात्त्विक अवशेष उदयपुर के समीप एक गाँव में पाए गए हैं, वह गाँव है** – आहड़। [R.A.S. Pre. Exam 1998]
- ❒ **गणेश्वर का टीला जहाँ से ताम्रयुगीन अवशेष प्राप्त हुए है, कहाँ स्थित है** – सीकर में। [R.A.S. Exam 1989]
- ❒ **कालीबंगा पुरास्थल के किस दिशा में जुता हुआ खेत मिला है**– दक्षिण–पूर्व [कॉलेज व्याख्याता (सारंगी)30.05.2019]
- ❒ **कालीबंगा में प्राप्त चबूतरे निर्मित है**– मिट्टी की ईंटों से [कॉलेज व्याख्याता (इतिहास) –2016]
- ❒ **गिलूण्ड किस नदी किनारे पर स्थित है**– बनास [कॉलेज व्याख्याता (सारंगी) परीक्षा 30.05.2019]
- ❒ **प्रागैतिहासिक काल की बागोर सभ्यता के अवशेष कोठारी नदी के तट पर किस स्थान से प्राप्त हुए हैं** –महासतियाँ [प्रवक्ता (तकनीकी शिक्षा विभाग) –12.03.2021]
- ❒ **राजस्थान का कौनसा प्रागैतिहासिक स्थल ताम्रपाषाणिक काल से संबंधित है** –बालाथल [कॉलेज व्याख्याता (इतिहास)2016]
- ❒ **निम्नलिखित में से किसने बालाथल का उत्खनन किया**–वी एन मिश्र [कॉलेज व्याख्याता (इतिहास) –2016]
- ❒ **सात अग्नि वेदिकाओं की पंक्ति प्राप्त हुई है**– कालीबंगा
- ❒ **किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिन्धु घाटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा है?** –दशरथ शर्मा
- ❒ **दोहरी रक्षा – प्राचीर के साक्ष्य राजस्थान की किस सभ्यता से प्राप्त हुए हैं ?** –कालीबंगा सभ्यता
- ❒ **निम्नलिखित में से कौन-से स्थल को 'धूलकोट' भी कहा जाता है?** –आहड़
- ❒ **राजस्थान के किस जिले में पुरातात्त्विक 'बागोर कस्बा' स्थित है?** –भीलवाड़ा
- ❒ **बागोर भीलवाड़ा जिले की .....नदी के कांठे पर स्थित है** –कोठारी
- ❒ **डॉ. केदारनाथ पुरी किस पुरातात्विक स्थल के अनुसंधानकर्ता है?** –रैढ़ (टोंक)
- ❒ **अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (उत्तर–15 शब्दों में)**
  - पीलीबंगा [RAS Main Exam–1984]
  - बैराठ [RAS Main Exam–1984, 1994]
  - कालीबंगा [RAS Main Exam–1994, 1997]
  - आहड़ [RAS Main Exam–1991,1997]
- ❒ **लघुत्तरात्मक प्रश्न (उत्तर – 50 शब्दों में)**
  - राजस्थान के पुरातात्त्विक स्थल [RAS Main Exam–1996]
- ❒ **निबन्धात्मक प्रश्न (उत्तर – 100/200 शब्दों में)**
  - राजस्थान के निम्नलिखित पुरातात्विक स्थलों का संक्षिप्त विवरण दीजिए– [RAS Main Exam–2018]

    1. बागोर, 2. कालीबंगा, 3. आहड़
  - राजस्थान के पुरातात्त्विक स्थलों की विवेचना एवं उनका महत्त्व। [RAS Main Exam–1999]